!!सफलता की कहानी ग्रामीणों की जुबानी!!

राजस्थान में भीलवाड़ा जिले के माण्डलगढ़ से 14 कि.मी. दूर सिंगोली रोड पर 3 कि.मी. दक्षिण की तरफ एक छोटासा गांव रघुनाथपुरा (नयागांव) स्थित हैं। इस गांव की कुल जनसंख्या 150 हैं। इस छोटे से ग्राम में 35 परिवार निवास करते हैं, जिनमें चौधरी के 25, नाथ के 8, शर्मा के 2 परिवार निवास करते हैं। यहां आज हर घर में संकर नस्ल के मवेशी मिलते हैं। *इस गांव में दूध, दही, घी, छाछ आदि पर्याप्त मात्रा में हर घर में उपलब्ध हैं। इसका कारण बायफ पशुधन विकास केन्द्र मोटरों का खेड़ा हैं।* यह केन्द्र रघुनाथपुरा से 4 कि.मी. दुर दक्षिण में स्थित हैं। गांव का मुख्य व्यवसाय कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी हैं।

पूर्व की स्थिति :– बायफ पशुधन विकास केन्द्र मोटरों का खेड़ा केन्द्र स्थापना से पूर्व (वर्ष 2000 से पूर्व) यहां संकर नस्ल के कोई जानवर (मवेशी) नहीं था। देशी गाय/भैंसों से बहुत की कम मात्रा में दूग्ध प्राप्त होता था एवं मवेशी भी बहुत कम मात्रा में थे। ग्राम में अधिकांश घर कच्चे बने हुये थे। ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि था जो कि मानसून आधारित था। ग्राम के बेरोजगार नवयुवक रोजगार हेतु अन्य राज्यों में पलायन करते हैं। शिक्षा का स्तर बहुत कम था। गांव में छूपी बेरोजगारी थी। पशुप्रबंधन एवं उन्नत कृषि के बारे में जानकारी का अभाव था। ग्रामीण ऋण के बोज से ग्रसित थे। ग्राम में रोजगार के कोई स्त्रोत नहीं थे।

वर्तमान स्थिति :– आज इस गांव में 115 संकर नस्ल की गायें व 80 मुर्रा भैंसे हैं। इनमें से 60 गायें व 45 भैंसे वर्तमान में दुग्ध में हैं। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि को देखते हुये यहां महिला सरस डेयरी की स्थापना हुयी (वर्ष 2008 में), जिसमें आज प्रतिदिन 450 से 500 लीटर तक दुग्ध का संकलन किया जा रहा हैं। साथ ही ग्राम की प्रतिदिन 11,000/– से 12,000/– रूपये की आमदनी भी हो रही हैं। ग्रामीण घरेलू पूर्ती हेतु 2–3 लीटर दुग्ध घर पर रखते हैं, जिससे घी व दही तैयार करते हैं। पशुपालन का अधिकांश कार्य महिलायें ही करती हैं। ग्राम से विगत 3 वर्षों से (2014 से 2016) कुल 50 संकर नस्ल के जानवरों की बिक्री हुयी जिससे 22,50,000/– रू. की आमदनी हुयी। इस आय के आधार पर ग्रामीणों द्वारा एकत्रित अंशदान से गांव के बीचो–बीच एक मंदिर का निर्माण किया गया हैं।

यहां हर घर में संकर नस्ल के जानवर/मवेशी देखे जा सकते हैं, वो भी सिर्फ बायफ द्वारा निर्मित सिमेन से उत्पन्न। पशु प्रबंधन बहुत ही बढ़िया हो गया हैं, जैसे पशुओं के लिये टीनशेड, चारेपानी की व्यवस्था, आदि।

ग्राम में शिक्षा का स्तर भी काफी सुधरा। वर्तमान में तीन नवयुवकों का सरकारी सेवा में चयन हुआ हैं, साथ ही यहां के नवयुवक उच्च शिक्षा हेतू अच्छे कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं। दुग्ध उत्पादन से प्राप्त आय से आज अधिकांश मकान पक्के बन गये हैं तो कुछ निर्माणाधीन हैं।

पहले कच्चा घर

वर्तमान में पक्का घर

वर्तमान में पक्का घर

निर्माणाधीन पक्का घर

महिला दुग्ध उत्पादन सहकारी समिति की अध्यक्ष श्रीमति प्रेम बाई जाट का कहना है कि अब महिलायें अपने आवश्यक कार्यों हेतू पैसों के लिये दूसरों पर निर्भर नहीं हैं।

आज यहां के किसान उन्नत पशुपालन व कृषि को अपना रहे हैं। आज यहां हर परिवार के पास आधुनिकता के लगभग सभी संसाधन जैसे टी.वी., मोबाईल, मोटर साईकिल, कार, वासिंग मशीन आदि उपलब्ध हैं।

<u>पहले देशी गाय</u>

<u>वर्तमान में संकर गायें</u>

श्रीमति प्रेम बाई जाट के <u>पूर्व में देशी गाय</u>

<u>वर्तमान में संकर गायें</u>

<u>क्षैत्र के ग्रामीणों का कहना है कि बायफ द्वारा हमारे ग्राम में देशी जानवरों में जो नस्ल सुधार करके दुग्ध उत्पादन से वृद्धि की उसे हम ताउम्र नहीं भूलेंगे एवं बायफ को धन्यवाद् प्रेषित करते हैं !!</u>